**ई-पाठ-संस्कृत-कक्षा  नवमी-५अक्तुबर**

**विषय-संस्कृतम्**

**सप्ताह-5-9अक्तुबर**

**कालांश-2**

**सहायक सामग्री-अभ्यास पत्रिका,ई-पाठ,**

https://youtu.be/QwW0I_ZrozY

**उपविषय-भ्रान्तो बालः**

**शिक्षण अधिगम_छात्र पाठ को पढ़कर व समझ कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे ।**

## पाठ – 6 भ्रान्तो बालः (भ्रमित बालक)

कोई भ्रमित बालक पाठशाला जाने के समय खेलने के लिए चला गया किन्तु उसके साथ खेल के द्वारा समय बिताने के लिए कोई भी मित्र उपलब्ध नहीं था। वे सभी पहले दिन के पाठों को याद करके विद्यालय जाने की शीघ्रता से तैयारी कर रहे थे। आलसी बालक लज्जावश उनकी दृष्टि से बचता हुआ अकेला ही उद्यान में प्रविष्ट हो गया। उसने सोचा–ये बेचारे पुस्तक के दास वहीं रहें, मैं तो अपना मनोरंजन करूँगा। कुद्घ गुरूजी का मुख मैं बाद में देखूँगा। वृक्ष के खोखलों मे रहने वाले ये प्राणी (पक्षी) मेरे मित्र बन जाएँगे।

तब उसने उस उपवन में घूमते हुए भौंरे को देखकर खेलने के लिए बुलाया। उस भौंरे ने उस बालक की दो – तीन आवाजों की ओर तो ध्यान ही नहीं दिया। तब बार–बार हठ करने वाले उस बालक के प्रति उस (भौंरे) ने गुनगुनाया-"हम तो पराग इकट्ठा करने में व्यस्त हैं।"

हम तो तब बालक ने (अपने मन में) 'व्यर्थ में घमंडी इस कीड़े को छोड़ों' ऐसा सोचकर दूसरी ओर देखते हुए एक चिड़े (पक्षी) को चोंच से घास-तिनके आदि उठाते हुए देखा। (वह) बोला –"अरे चिड़िया के बच्चे। तुम मुझ मनुष्य के मित्र बनोगे? आओ खेलते हैं। इस सूखे तिनके को छोड़ो। मैं तुम्हें स्वादिष्ट खाद्य–वस्तुओं के ग्रास दूँगा।" मुझे बरगद के पेड़ की शाखा पर घोंसला बनाना है, अतः मैं काम से जा रहा हूँ"– ऐसा कहकर वह अपने काम में व्यस्त हो गया।

तब दुखी बालक ने कहा–ये पक्षी मनुष्यों के पास नहीं आते। अतः मैं मनुष्यों के योग्य किसी अन्य मनोरंजन करने वाले को ढूँढता हूँ – ऐसा सोचकर भागते हुए किसी कुत्ते को देख प्रसन्न हुए उस बालक ने कहा – हे मनुष्यों के मित्र! इस गर्मी के दिन में व्यर्थ क्यों घूम रहे हो? इस घनी शीतल छाया वाले पेड़ का आश्रय लो। मैं भी खेल में तुम्हें ही उचित सहयोगी समझाता हूँ।

"जो अपने पुत्र के समान मेरा पोषण करता है, उस स्वामी के घर की रक्षा के कार्य में लगे होने से मुझे थोड़ा सा भी हटना नहीं चाहिए।"

सबके द्वारा इस प्रकार मना कर दिए जाने पर टूटे मनोरथ (इच्छा) वाला वह बालक सोचने लगा–इस संसार में प्रत्येक प्राणी अपने–अपने कर्तव्य में व्यस्त है। कोई भी मेरी तरह समय नष्ट नहीं कर रहा है। इन सबको प्रणाम, जिन्होंने आलस्य के प्रति मेरी घृणा–भावना उत्पन्न कर दी। अतः मैं अपना उचित कार्य करता हूँ–ऐसा सोच कर वह शीघ्र पाठशाला चला गया।

तब से वह विद्याध्ययन के प्रति रूचि रखने वाला होकर विद्वत्ता, कीर्ति तथा धन को प्राप्त करने वाला हुआ।